8

असाम्प्रदायिक कलीसियाः

बपतिस्मा लेकर उद्धार

एक वक्ता, सेनाध्यक्ष और लेखक के रूप में अमेरिका के राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट एक महान शिक्षक तथा नेता थे। अपने काम में वह सबसे अलग थे। निर्देश लेने के लिए इतने अमेरिकियों का किसी के कदमों में आना बहुत कम लोगों को नसीब होता है। वे उनके शिष्य अर्थात उनसे सीखने वाले तो थे, पर केवल शिष्य ही नहीं थे। उनमें से बहुत कम लोग इतने नासमझ होंगे जिन्होंने दूसरे सभी शिक्षकों को छोड़कर केवल रूज़वेल्ट का दामन थामा हो।

हम में से बहुत कम लोग ऐसे होंगे जो किसी भी नेता की बात आसानी से मानने के लिए तैयार हों। परन्तु किसी को राजनीति, विश्वास करने, शिक्षा और व्यावहारिक शिक्षाओं में रूज़वेल्ट का छात्र बनने के इच्छुक व्यक्ति को देखकर हमें उस पूर्व राष्ट्रपति के प्रति उसके विश्वास और निष्ठा का आसानी से पता चल जाएगा। हमें उस व्यक्ति के चेहरे से उसे मिलने वाले सम्मान का मुकुट देखने में देर नहीं लगेगी।

स्वतन्त्र सोच रखने वालों की नज़र में किसी इन्सान में इतना विश्वास, वफ़ादारी दिखाना और उसे इतना सम्मान देना मूर्खता ही है। इसके विपरीत उस गलीली आदमी के चरणों में दण्डवत करना परमेश्वर की इच्छा है। धर्म में केवल उसी के चेले होना स्वर्ग के परमेश्वर की इच्छा है:

> कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा; वह एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा (मत्ती 6:24क)।
>
> क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है; और तुम सब भाई हो (मत्ती 23:8ख)।
>
> क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात मसीह (मत्ती 23:10ख)।
>
> यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और [तुम] सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा (यूहन्ना 8:31ख, 32)।
>
> जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी (2 यूहन्ना 9)।

प्रभु यीशु का सच्चा अनुयायी, अर्थात मसीह का, और केवल उसी का चेला केवल वही हो सकता है जो मसीह द्वारा दिए गए विश्वास, शिक्षा और मन से उसे अपना प्रभु मानता है और प्रभु के लिए ऐसा जीवन जीने के लिए अपने आपको पवित्र करता है। यदि पृथ्वी पर मसीही लोग हैं, तो नि:संदेह, एक मसीही ऐसा ही व्यक्ति होगा। वह केवल और केवल मसीही है। वह मसीह के सम्बन्ध के अलावा किसी अन्य सम्बन्ध का, चाहे वह धार्मिक हो या कलीसियाई, इन्कार करता है। वह अपने धर्म में मसीह की शिक्षा के अलावा किसी दूसरी शिक्षा को नहीं आने देता और निर्भीक होकर उसे मानने से इन्कार करता है। वह प्रभु का अनुयायी होने के बजाय किसी भी दूसरे नाम से उद्धार पाया होने के लिए प्रसिद्ध होने से इन्कार करता है।

परन्तु इससे पहले कि ऐसा व्यक्ति अपने दावों में झूठा साबित हो, बाइबल के प्रत्येक छात्र को चाहिए कि वह अपनी धार्मिक स्थिति के लिए पूरी तरह से बाइबल को आधार बनाए। हमें यह भी स्पष्ट रूप से मान लेना चाहिए कि इसी स्थिति से परमेश्वर अपने पास आने वालों से प्रसन्न होता है। यदि हम असाम्प्रदायिक मसीही नहीं बनना चाहते, तो हम उस एकता के होने की आशा भी नहीं कर सकते जिसके लिए यीशु ने प्रार्थना की थी।

यदि कोई व्यक्ति उस बात को पाने की इच्छा से उसके लिए काम नहीं करता जिसके लिए यीशु ने प्रार्थना की व कार्य किया था तो वह सच्चा मसीही नहीं है क्योंकि वह एक गैर मसीही जैसे ही काम करता है। यीशु हमारे सामने यही परीक्षा रखता है: ''यदि तुम इब्राहीम की संतान होते, तो इब्राहीम के समान काम करते'' (यूहन्ना 8:39ख)। इसी तरह हम कह सकते हैं, ''यदि तुम मसीह की संतान हो, तो मसीह के समान काम करो, वही इच्छा करो जिसके लिए उसने प्रार्थना की और तुम उस काम को पूरा करने वाले होंगे जो मसीह करता है।'' मेरा यह कहना कि मसीहियत को मानने वालों में साम्प्रदायिकवाद को प्रोत्साहित करने वाले लोग फूट को बढ़ावा दे रहे हैं, गलत नहीं होगा। कोई भी जो फूट को बढ़ावा देता है वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के लहू की मुहर का विरोध करता है, इसलिए वास्तव में वह मसीही नहीं है।

मैं फिर अपने पाठकों से यरूशलेम में होने वाली उस असाम्प्रदायिक प्रार्थना सभा में जाने को कहता हूं। यह ज़रूरी है। यदि हम मन से अर्थात सचमुच मसीही बनना चाहते हैं, तो हमारे लिए बाइबल की बातों को ''एक ही तरह समझना'' आवश्यक है। जैसे पति और पत्नी, एक दूसरे से सहमत होना चाहते हैं। एक अच्छा पारिवारिक जीवन मनों की एकता से ही मिलता है। जब पति और पत्नी अपने मतभेदों को कम करने और एक दूसरे से सहमत होने का प्रयास नहीं करते हैं, तो उनके घर बर्बाद हो जाते हैं। पवित्र आत्मा बड़े प्रेम से परमेश्वर के लोगों को मेल के बंध में आत्मा की एकता को बनाए रखने का यत्न करने का आग्रह करता है (इफिसियों 4:3)। मुझे यकीन है कि यरूशलेम में इस असाम्प्रदायिक काम का सबको पता है और हर कोई मानेगा कि इन प्रेम करने वाले, वफ़ादार मनों में किसी प्रकार की असहमति नहीं थी।

अंग्रेज़ी के किंग जेज़्स वर्ज़न में कई बार हमें पापों की क्षमा के लिए ''for the remission of sins'' मिलता है। कहते हैं कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ''पापों की क्षमा के लिए [for] मन फिराव के बपतिस्मे का प्रचार करता था'' (मरकुस 1:4ख; लूका 3:3 भी देखिए)। पुनः, पिन्तेकुस्त के दिन, जैसा कि हमने देखा है, पतरस ने विश्वास करने वाले पश्चाज़ापी मन वाले लोगों से कहा था, ''तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए [for] यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले'' (प्रेरितों 2:38ख)। फिर प्रभु भोज देते हुए हमारे प्रभु ने कहा था, ''तुम सब इस में से पीओ। ज़्योंकि [for] यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमिज़ बहाया जाता है'' (मज़ी 26:27ख, 28)।

आइए इस वाज़्यांश के अर्थ की समीक्षा करते हैं। इसमें कहानी है। घबराए हुए लोग पुकार उठे थे ज़्योंकि उन पर पाप का विशेषकर हमारे प्रभु की हत्या के पाप का बोझ था। वे इस बोझ से राहत पाना चाहते थे और राहत पाने की इस इच्छा के कारण वे पुकार उठे थे। हम सब इस बात से सहमत हैं कि उन्हें राहत मिली, परन्तु बहुत से निष्कपट मन वाले लोग इस बात पर असहमत हैं कि उन्हें यह राहत बपतिस्मा लेने से पहले मिली या बाद में।

जैसा कि हमने पिछले पाठ में देखा था, अंग्रेज़ी का शज़्द ''for'' अनेकार्थ या अस्पष्ट शज़्द है जिसके एक से अधिक अर्थ मिलते हैं। साज़्प्रदायिक दिलचस्पी वाले लोगों ने इस तथ्य से लाभ उठाकर बहुत से निष्कपट मन वाले लोगों को यह विश्वास दिलाकर कि ''for the remission of sins'' वाज़्यांश में ''for'' का अर्थ ''because of'' (के कारण) या ''on account of'' (या इस कारण) है। इस प्रकार, पतरस के संदेश को जिससे लोग घबरा गए थे इस शिक्षा के समर्थन के लिए इस्तेमाल किया जाता है कि उन्हें बपतिस्मे से पहले उद्धार मिल गया था।

जांच करने पर, जहां-जहां अंग्रेज़ी में ''for'' शज़्द का इस्तेमाल किया गया है वह यूनानी में उसी शज़्द से अनुवादित किया गया है। निश्चय ही, जब यीशु ने पापों की क्षमा के लिए अपना लहू बहाया, तो यह क्षमा ''के कारण'' (because of) नहीं, बल्कि इसलिए था ताकि पाप क्षमा किए जा सकें। इस व्याज़्या से कोई असहमत नहीं है। यहां हम एक जैसी बातें करते हैं और एक मन तथा एक मत हैं। तो फिर हम एक आयत में तो ''for'' के अर्थ पर एकमत हैं लेकिन दूसरी आयतों में ''for'' के अर्थ पर सहमत नहीं हैं जबकि तीनों जगह ''for'' उसी यूनानी शज़्द से लिया गया है ? और सुनिश्चित करने के लिए, यदि उस शज़्द के जिससे अंग्रेज़ी का ''for'' शज़्द लिया गया है दो अर्थ हैं, एक तो इसका अर्थ यह हो सकता है कि जब पतरस ने कहा तो इसका अर्थ ''इस कारण'' था और जब मसीह ने कहा तो इसका अर्थ ''पाने के लिए'' हो गया। फिर यह अस्पष्टता दूसरी आयतों से दूर हो सकती थी। जबकि सच्चाई यह है कि पवित्र आत्मा के वचन में कोई अस्पष्टता नहीं है। अंग्रेज़ी में भी सदियों से की गई विद्वानों की खोज ''for'' का स्पष्ट अर्थ ही देती है ''looking unto reaching to (या into) an object, end, या condition.'' निस्संदेह, eis के इस सकारात्मक अर्थ के विरुद्ध कोई आवाज़ नहीं है ज़्योंकि शज़्द में ही इसका अर्थ मिल जाता है जैसा कि हिन्दी के अनुवाद में भी स्पष्ट है।

किंग जेज़्स के अनुवाद के संशोधित संस्करणों अर्थात संसार के महानतम विद्वानों के काम (अंग्रेज़ी बाइबलें) द इंग्लिश रिवाइज़्ड वर्ज़न (1881–85), द अमेरिकन रिवाइज़्ड वर्ज़न और द स्टैंडर्ड अमेरिकन वर्ज़न (1901), में आगे की ओर देखते शज़्द का इस्तेमाल किया गया है। *eis* के स्पष्ट अर्थ के बारे में अपने ज्ञान के कारण विद्वानों की समितियों को इन ''for'' की जगह ऐसा शज़्द इस्तेमाल करना पड़ा जिसका अर्थ स्पष्ट और आगे की ओर देखता है। ज़्योंकि ऐसा न करने पर उन्हें अति पवित्र भरोसे के प्रति अविश्वासी या विश्वासघाती माना जाता। उन्होंने इसके स्थान पर हमें ज़्या शज़्द दिया है? इन आयतों में ''for'' की जगह ''unto'' शज़्द लगाया गया है इसलिए अब उन संस्करणों में यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा देने को ''unto remission,'' यीशु द्वारा अपना लहू बहाने को "unto remission" और पतरस द्वारा पापों की क्षमा के लिए आज्ञा को ''unto remission'' है। यूरोप और अमेरिका के विद्वानों ने मिलकर इस बात का ऐलान किया है कि इन सभी आयतों में इस शज़्द का अर्थ एक ही है।

अमेरिका के प्रसिद्ध कॉलेजों और यूनिवर्सिटियों में पढ़ाई जाने वाली *गुडविन 'स ग्रीक ग्रामर,* के लेखक डज़्ल्यू. डज़्ल्यू. गुडविन ने कहा था, ''मेरे विचार से प्रेरितों 2:38 में *eis उद्देश्य* या *प्रवृज़ि* को व्यज़्त करता है और *for* या *unto* जिसका अर्थ के लिए है, सही अनुवाद है।''[1] नये नियम के यूनानी–अंग्रेज़ी शज़्दकोश के एक सज़्मानित लेखक, जे. एच. थेयर ने कहा है, ''मैं संशोधित संस्करणों के 'unto the remission of your sins' को सही मानता हूं (जिसमें *eis* उस लक्ष्य को व्यज़्त करता है जिसे थोड़ी देर पहले 'मन फिराव और बपतिस्मे' द्वारा सुरक्षित किया गया था)।''[2]

अमेरिकन बेपटिस्ट पज़्लिकेशन सोसायटी के बोर्ड के सदस्य, जेज़्स डज़्ल्यू. विलमर्थ ने लिखा था:

> इस बात का डर है कि यदि हम *eis* को इसका स्वाभाविक और स्पष्ट अर्थ दें, तो बपतिस्मे को आवश्यकता से अधिक महत्व दिया जाएगा, प्रायश्चित को कम महत्व दिया जाएगा, और पवित्र आत्मा के काम को नगण्य समझा जाएगा। विशेष तौर पर यह दावा किया जाता है कि बेपटिस्टों और कैज़्पबेलियों में बहुत अन्तर है।[3] हमें बड़ी गंभीरता से बताया जाता है कि यदि हम प्रेरितों 2:38 में *eis* का अर्थ *के लिए* (अर्थात in order to) निकाल दें तो हम युद्ध हार जाएंगे, और शीघ्र ही कैज़्पबेली हो जाएंगे; जबकि इसका अनुवाद *इस कारण* (अर्थात on account of या in token of) करने पर हम बेपटिस्ट रह सकते हैं।
>
> ... साफ़ तौर पर और ईमानदारी से हमारा काम परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए मूल लेखों का वही अर्थ निकालना सुनिश्चित करना है। ... इस प्रश्न का कोई महत्व नहीं है कि ''प्रामाणिकता के पक्ष के लिए पतरस को ज़्या कहना चाहिए था?'' वास्तविक प्रश्न यह है कि ''पतरस ने ज़्या *कहा* और उसके कहने का ज़्या *अर्थ* था ...?'' ...
>
> *eis* को इसका मूल अर्थ देने से सत्य की कोई हानि नहीं होगी। जब कैज़्पबेली प्रेरितों 2:38 का अनुवाद *in order to* करते हैं, तो वे इसका सही अनुवाद कर

रहे होते हैं। ज़्या किसी अनुवाद को इसलिए गलत कहा जाए कि उसे कैज़्पबेली लोगों ने किया है ?[4]

मैं इस अनुवाद का समर्थन करने वाले बहुत से दूसरे विद्वानों को भी उद्धृत कर सकता था, परन्तु इस तथ्य को स्थापित करने के लिए कि पतरस ने विश्वास करने वाले, पश्चाज़ापी मन वाले लोगों को बपतिस्मा लेने के लिए कहा था ताकि वे उद्धार पाएं या पापों से क्षमा पाएं, *शैफर्ड'स हैंडबुक ऑन बेपटिज़्म* से ये तीन उद्धरण ही काफ़ी हैं। जैसे विलमर्थ ने कहा है, मैं खुश हूं, कि मैं इसके स्पष्ट अर्थ को नकारकर इस आयत को नज़रअंदाज नहीं करता। ... स्पष्टतया, प्रेरितों 2 अध्याय में असाज़्प्रदायिक प्रार्थना सभा (मीटिंग) के लोगों को बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी गई थी ताकि उनके पाप मिटाए जा सकें।

पाद टिप्पणियां

[1]जे. डज़्ल्यू. शैफर्ड, *हैंडबुक ऑन बेपटिज़्म* (नैशविल्ले, गॉस्पल ऐडवोकेट कं., 1950), 348 में उद्धृत डज़्ल्यू. डज़्ल्यू. गुडविन, टू जे. डज़्ल्यू. शैफर्ड, 27 जुलाई 1893, । [2]शैफर्ड, 356 में उद्धृत, जे. एच. थेयर, टू जे. डज़्ल्यू. शैफर्ड, 5 मई 1893. [3]मिस्टर विलमर्थ, जो कि एक बेपटिस्ट थे, का बपतिस्मे पर वही विचार था जो उन लोगों का है जिन्हें वह ''campbellites'' अर्थात कैज़्पबेल के अनुयायी कहता था। [4]जेज़्स डज़्ल्यू. विलमर्थ, ''बेपटिज़्म एण्ड रिमिशन,'' *बेपटिस्ट ज़्वार्टरली* (जुलाई 1877): 304-5; शैफर्ड, 357-59 में उद्धृत।